न्यायालय

सहायक कलक्टर/उपखण्ड अधिकारी

गुढामालानी–बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी –केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

वाद संख्याः– 2025/13 दर्ज तिथिः– 20.01.2025

1. गवरी पुत्री नवलाराम पत्नी पदमाराम
   जाति जाट निवासी मीठीबेरी
2. दलू पुत्री नवलाराम पत्नी जीवाराज
   जाति जाट रेलों की बेरी पीहर पक्ष ग्राम कड़वासरों का धोरा, पटवार मण्डल नोखड़ा तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर।

............................वादी

बनाम

1. नवलाराम वल्द जेठाराम
2. नारणाराम वल्द नवलाराम
3. पोकराराम वल्द जेठाराम
   कौम जाट निवासी कड़वासरों का धोरा पटवार मण्डल नोखड़ा तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर।
4. शाखा प्रबंधक, जे0ट0जी0बी0 बैंक शाखा होडू।
5. राजस्थान सरकार बजरिये तहसीलदार एवं उपपंजीयक नोखड़ा।

..........................प्रतिवादीगण

उपस्थित अधिवक्ता
वादीः– श्री चिमनसिंह चौधरी
प्रतिवादीः– एकतरफा

राजस्व वाद अन्तर्गत धारा–88, 188
राजस्थान काश्तकारी अधि0–1955

–ःनिर्णयः–

1. आज यह पत्रावली वाद पत्र बाबत् इस्तकराहक्क अन्तर्गत धारा–88, 188 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम–1955 का वास्ते निर्णय हेतु पेश हुई। वाद पत्र का सूक्ष्म वृतान्त इस प्रकार से है कि वादी ने निवेदन किया गया कि मुताबिक राजस्व रिकॉर्ड आराजी हाल खसरा संख्या 108/0.3804 है0, 109/0.0809 है0, 110/13.8807 है0, 717/87/4.1683 है0, 110/1/29.3316 है0 मौजा कड़वासरों का धोरा पटवार मण्डल नोखड़ा, खसरा संख्या 82/1/4.8562 है0, 83/0.4371 है0, 84/0.1295 है0, 85/3.9335 है0 मौजा नाइयों की ढाणी तहसील नोखड़ा में अवस्थित है। उक्त

Signature Not Verified

Digitally signed by Keshav Kumar Meena
Date: 2025.08.08 09:30:27 IST
Reason: SelfAttested

आराजी वादी व प्रतिवादी संख्या 02 के दादा तथा प्रतिवादी संख्या 01 व 03 के दादा जेठाराम की खातेदारी आराजी थी। खातेदार जेठाराम की विरासत अनुसार नवलाराम पुत्र जेठाराम एवं पोकराराम पुत्र जेठाराम के हिस्से खातेदारी दर्ज हुई। इस प्रकार उक्त खातेदारी आराजी पैतृक आराजी है। वादी व प्रतिवादी संख्या 01—03 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत हिन्दू के अंतर्गत आने के कारण हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित रखते हैं। इसी अनुसार वादीगण वर्तमान में मौके पर काबिज काश्त है। अतः उक्त आराजी पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित होने के आधार पर वादी को खातेदार घोषित किया जाकर प्रतिवादी को वादीगण की खातेदारी आराजी पर दखलअंदाजी करने से रोकने हेतु स्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किया जाने का निवेदन किया।

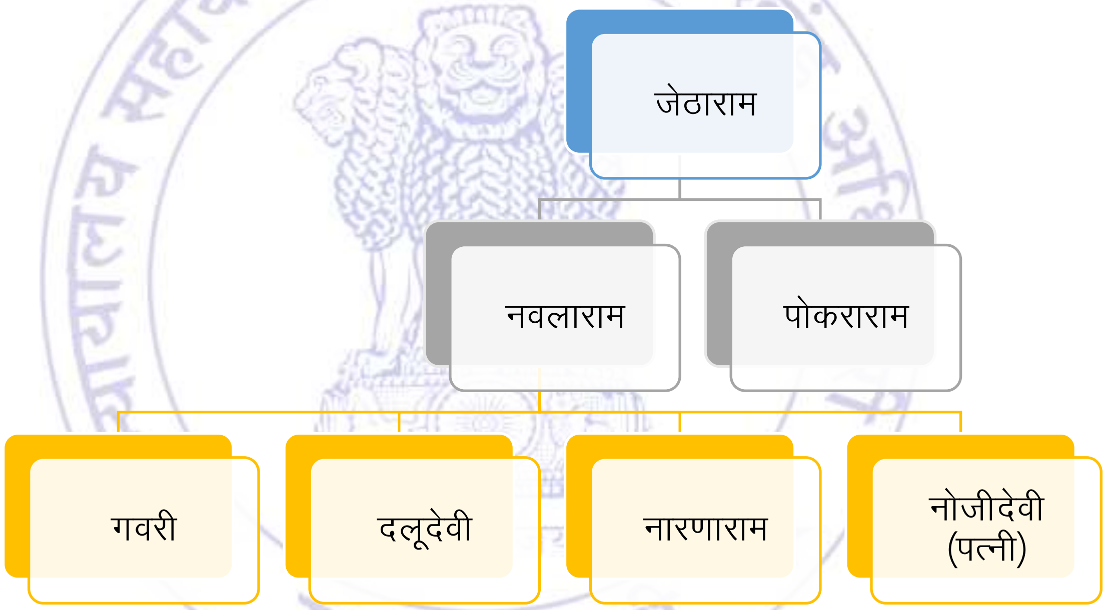

2. वाद पत्र दर्ज रजिस्टर किया जाकर प्रतिवादी को जरिये नोटिस तलब किया गया। प्रकरण में सभी प्रतिवादीगण के बावजूद रजिस्टर्ड तामिल अनुपस्थित रहने के कारण उनके विरूद्ध एकतरफा कार्यवाही अमल में लाई गई। तत्पश्चात् पत्रावली वादी साक्ष्य में नियत की गई। प्रकरण में वादीगण द्वारा साक्ष्य स्वरूप निम्न दस्तावेज प्रस्तुत किए—

प्रदर्श	दस्तावेज	संवत / विवरण
प्रदर्श—01	खतौनी बंदोबस्त	सम्वंत 2012—32 मौजा नोखड़ा
प्रदर्श—02	जमाबंदी	खाता संख्या 23 सम्वंत 2073—76 मौजा कड़वासरों का धोरा

Signature Not Verified

Digitally signed by Keshav Kumar Meena
Date: 2025.08.08 09:30:27 IST
Reason: SelfAttested

प्रदर्श–03	जमाबंदी	खाता संख्या 27 सम्वंत 2072–75 मौजा नाइयों की ढाणी
प्रदर्श–04	जमाबंदी	खाता संख्या 22 सम्वंत 2073–2076 मौजा कड़वासरों का धोरा
प्रदर्श–05	जमाबंदी	खाता संख्या 23 सम्वंत 2073–2076 मौजा कड़वासरों का धोरा
प्रदर्श–06	जमाबंदी	खाता संख्या 23 सम्वंत 2073–2076 मौजा कड़वासरों का धोरा
प्रदर्श–07	जमाबंदी	खाता संख्या 31 सम्वंत 2064–2067 मौजा नेहरों की ढाणी खुर्द
प्रदर्श–08	जमाबंदी	खाता संख्या 16 सम्वंत 2057–2060 मौजा नेहरों की ढाणी खुर्द
प्रदर्श–09	जमाबंदी	खाता संख्या 22 सम्वंत 2069–2072 मौजा कड़वासरों का धोरा
प्रदर्श–10	जमाबंदी	खाता संख्या 88 सम्वंत 2057–2060 मौजा अणखिया
प्रदर्श–11	जमाबंदी	खाता संख्या 94 सम्वंत 2061–2064 मौजा अणखिया
प्रदर्श–12	जमाबंदी	खाता संख्या 104 सम्वंत 2065–2068 मौजा अणखिया
प्रदर्श–13	जमाबंदी	खाता संख्या 68 सम्वंत 2065–2068 मौजा अणखिया
प्रदर्श–14	जमाबंदी	खाता संख्या 29 सम्वंत 2057–2060 मौजा अणखिया
प्रदर्श–15	जमाबंदी	खाता संख्या 29 सम्वंत 2061–2064 मौजा अणखिया
प्रदर्श–16	जमाबंदी	खाता संख्या 23 सम्वंत 2069–2072 मौजा कड़वासरों का धोरा
प्रदर्श–17	नामांतरकरण संख्या 85	मौजा अणखिया
प्रदर्श–18	नामांतरकरण संख्या 30	मौजा नेहरों की ढाणी खुर्द
प्रदर्श–19	नामांतरकरण संख्या 62	मौजा कड़वासरों का धोरा
प्रदर्श–20	आधार कार्ड	गवरी देवी पत्नी पदमाराम
प्रदर्श–21	जनाधार कार्ड	गवरी देवी
प्रदर्श–22	जनाधार कार्ड	दलूदेवी
प्रदर्श–23	आधार कार्ड	दलूदेवी पत्नी जीवराज

Signature Not Verified

Digitally signed by Keshav Kumar Meena
Date: 2025.08.08 09:30:27 IST
Reason: SelfAttested

3. प्रकरण में वादीगण द्वारा साक्ष्य स्वरूप निम्न गवाह प्रस्तुत किए–

नाम	जाति	निवासी
गवरी पुत्री नवलाराम पत्नी पदमाराम	जाट	मीठीबेरी तहसील नोखड़ा
दलुदेवी पुत्री नवलाराम पत्नी जीवराज	जाट	रेलों की बेरी तहसील धोरीमन्ना

4. पत्रावली पर विद्वान अधिवक्ता वादी की बहस सुनी गई। दौराने बहस विद्वान अधिवक्ता द्वारा वाद पत्र में अंकित बिन्दुओं को मात्र दौहराते हुए आराजी पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित होने के आधार पर वादी को खातेदार घोषित किया जाकर प्रतिवादी को वादीगण की खातेदारी आराजी पर दखलअंदाजी करने से रोकने हेतु स्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किया जाने का निवेदन किया।

5. मैनें विद्वान अधिवक्ता वादी की बहस पर मनन किया गया एवं पत्रावली पर संलग्न दस्तावेजात् का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया गया। प्रकरण में वादी द्वारा दो निम्न अनुतोष निवेदित किये हैं:–
    1. वादग्रस्त भूमि में वादीनीगण को प्रतिवादी संख्या 01 के साथ सह–खातेदार घोषित किया जावे।
    2. वादीनीगण के हक हिस्से में किसी प्रकार का परिवर्तन, हस्तक्षेप व बेचान, रहन नहीं करने / कराने तथा राजस्व रिकॉर्ड व मौके की यथास्थिति बनाए रखने हेतु स्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किया जावे।

6. पत्रावली पर अनुतोषवार विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। सर्वप्रथम अनुतोष संख्या 01 जो कि निम्न प्रकार है:–
    1. वादग्रस्त भूमि में वादीनीगण को प्रतिवादी संख्या 01 के साथ सह–खातेदार घोषित किया जावे।

7. प्रकरण में प्रथम अनुतोष राजस्थान काश्तकारी अधिनियम–1955 की धारा–15 से संबंधित है। अतः सर्वप्रथम राजस्थान काश्तकारी अधिनियम–1955 की धारा–15 का उद्धरण यहां प्रासंगिक है। जो कि इस प्रकार है:–

> ***15. Khatedar tenants****— (1) Subject to the provisions of section 16 and clause (d) of Sub-section (1) of section 180 every person who, at the commencement of this Act, is a tenant of land otherwise than as a sub-tenant or a tenant of Khudkasht or who is, after the commencement of this Act, admitted as a tenant otherwise than a sub-tenant or tenant of Khudkasht or an allottee of land under, and in accordance with, rules made under section 101 of the Rajasthan Land Revenue Act, 1956 (Rajasthan Act 15 of 1956) or who acquires Khatedari rights in accordance with provisions of this Act or of the Rajasthan Land Reforms and Resumption of Jagir Act, 1952 (Rajasthan Act VI of 1952) or of any other law for the time being in force shall be a Khatedar tenant and shall, subject to the provision of this Act be entitled to all the rights conferred; and be subject to all the liabilities imposed on Khatedar tenants by this Act:*

Signature Not Verified
Digitally signed by Keshav Kumar Meena
Date: 2025.08.08 09:30:27 IST
Reason: SelfAttested

***Provided** that no Khatedari rights shall accrue under this section to any tenant, to whom land is or has been let out temporarily in Gang Canal, Bhakra, Chambal or Jawai project area or any other area notified in this behalf by the State Government.*

(2) Notwithstanding anything contained in sub-section (1) Khatedari rights shall not accrue there under to any person to whom land had been let out before the commencement of this Act by the State Government in furtherance of the Grow More Food Campaign or under some special order subject to some specified conditions or in pursuance of some statutory or non-statutory rules and who shall have, before such commencement, made a default in securing the objective of such campaign or a breach of any such order, condition or rule.

(3) Any person referred to in sub-section (2) may, within three years from the date of commencement of this Act and on payment of a court-fee of twenty five naye paise apply to the Assistant Collector having jurisdiction praying for a declaration that acquired Khatedari right under sub-section (1) in the land held by him.

(4) Such application may be made on any of the following grounds, namely:
(a) that the land held by him was let out to him after the" commencement of this Act.
(b) that it was not let out to him in any of the circumstances specified in sub-section (2).
(c) that when the- land was so let out to him he was not apprised of such circumstances.
(d) that he had, before such commencement made no default or breach of the nature specified in sub-section (2).
(5) The Assistant Collector shall, upon the presentation of an application under sub-section (3), make inquiry in the prescribed manner and afford reasonable opportunity to the applicant of being heard and shall, if he does not reject the application , declare the applicant to have become Khatedar tenant of his holding in accordance with and subject to the provisions of the subsection (I).

8. प्रकरण में वादी द्वारा राजस्थान काश्तकारी अधिनियम–1955 की धारा–15 के अंतर्गत हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 के तहत अधिकार सृजित होने के आधार पर खातेदार के रूप में दर्ज होने का अनुतोष चाहा गया है। इस संबंध में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 की धारा–6 का प्रकरण में अवलोकन किया जाना आवश्यक है जिसके प्रासंगिक विवरण का उद्धरण इस प्रकार हैः–

6. Devolution of interest in coparcenary property.—
(1) On and from the commencement of the Hindu Succession (Amendment) Act, 2005 (39 of 2005), in a Joint Hindu family governed by the Mitakshara law, the daughter of a coparcener shall,—
(a) by birth become a coparcener in her own right the same manner as the son;
(b) have the same rights in the coparcenery property as she would have had if she had been a son;
(c) be subject to the same liabilities in respect of the said coparcenery property as that of a son, and any reference to a Hindu Mitakshara coparcener shall

Signature Not Verified

Digitally signed by Keshav Kumar Meena
Date: 2025.08.08 09:30:27 IST
Reason: SelfAttested

be deemed to include a reference to a daughter of a coparcener:

Provided that nothing contained in this sub-section shall affect or invalidate any disposition or alienation including any partition or testamentary disposition of property which had taken place before the 20th day of December, 2004.

9. उक्त उद्धरण अनुसार हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 की धारा–6 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि किसी हिन्दू पुरूष की संपत्ति में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 की धारा–6 के अनुसार पुत्र व पुत्री को समान अधिकार व दायित्व दिये जाने के प्रावधान है। प्रकरण में तथ्य निर्विवादित है कि वादी व प्रतिवादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में सम्पति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 के प्रावधान लागू होते हैं। साथ ही वादी द्वारा प्रस्तुत जमाबंदी के अवलोकन से स्पष्ट है कि मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी है। साथ ही प्रकरण में यह तथ्य भी निर्विवादित है कि वादीगण व प्रतिवादी संख्या 02 प्रतिवादी संख्या 01 की संतान हैं।

10. प्रकरण में वादी द्वारा मुतनाजा आराजी पर वादी व प्रतिवादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में सम्पति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 के प्रावधानों के तहत मुताबिक कानूनी हिस्सा खातेदारी अधिकारों की घोषणा का अनुतोष चाहा गया है। अतः हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 की धारा–6 के तहत वादीगण एवं प्रतिवादी संख्या 02 के प्रतिवादी संख्या 01 की संतान होने तथा प्रकरण में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 लागू होने तथा मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी होने के आधार पर वादी का अनुतोष मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम–1956 के अनुसार हक हिस्से तक स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।

11. प्रकरण में द्वितीय अनुतोष प्रतिवादीगण के विरूद्व स्थाई निषेधाज्ञा जारी करने से संबंधित है। प्रकरण में वादी के अनुतोष के विवेचन हेतु तथ्यों का गहन विश्लेषण से पूर्व राजस्थान काश्तकारी अधिनियम–1955 की धारा–188 का उद्धरण यहॉ प्रतीत होता है। जो कि निम्न प्रकार है:–

188. Injunction against wrongful ejectment—

(1) Any tenant whose right to or enjoyment of the whole or a part of his holding is invaded or threatened to be invaded by his landholder or any other person may bring a suit for the grant of a perpetual injunction.

(2) The court may after making the necessary enquiry grant a perpetual injunction in the following cases, namely-

(a) if there exist no standard for ascertaining the actual damage caused or likely to be caused by the invasion;

(b) if the invasion is such that pecuniary compensation does not afford adequate relief;

(c) where it is probable that pecuniary compensation cannot be got for the invasion.

Signature Not Verified

Digitally signed by Keshav Kumar Meena
Date: 2025.08.08 09:30:27 IST
Reason: SelfAttested

(d) where the injunction is necessary to prevent a multiplicity of proceedings.

12. उक्त राजस्थान काश्तकारी अधिनियम–1955 की धारा–188 के अवलोकन से स्पष्ट है कि धारा–188 के अन्तर्गत किसी खातेदारी आराजी पर खातेदारी अधिकारो की आमदरफत में किसी प्रकार का व्यवधान / अतिक्रमण किया जा रहा हो / किया जाने वाला हो उस स्थिति में व्यवधान उत्पन्न / अतिक्रमण करने वाले व्यक्ति को स्थाई निषेधाज्ञा से पाबंद किए जाने के प्रावधान बनाए गए है। राजस्थान काश्तकारी अधिनियम–1955 की धारा–188 की उपधारा–2 में स्थाई निषेधाज्ञा जारी किए जाने हेतु निम्न चार परिस्थितियां बताई गई है:–

परिस्थिति	विवरण
1.	जब हो रहे / होने वाले संभावित अतिक्रमण / व्यवधान / घुसपैठ से होने वाले नुकसान के आंकलन हेतु कोई मानक / मापदण्ड अस्तित्व में नहीं हो।
2.	जब अतिक्रमण / व्यवधान / घुसपैठ इस प्रकार का हो कि नुकसान की आर्थिक भरपाई / क्षतिपूर्ति पर्याप्त राहत / संतुष्टि प्रदान नहीं करता हो।
3.	जब इस तथ्य की संभावना हो कि अतिक्रमण / व्यवधान / घुसपैठ से होने वाले नुकसान की आर्थिक भरपाई / क्षतिपूर्ति की प्रदानगी संभव नहीं होगी।
4.	जब निषेधाज्ञा राजस्व विवादों की बहुलता को रोकने हेतु आवश्यक हो।

13. उक्त विधिक प्रावधानों के परिप्रेक्ष्य में प्रकरण का विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। वादी का यह कथन है कि उक्त आराजी पर प्रतिवादीगण द्वारा जबरन कब्जा कर उसके उपयोग व उपभोग में व्यवधान किया जाता है या उस पर निर्माण किया जाता है तो वादीगण को स्पष्ट रूप से नापूर्ति होने वाली क्षति संभावित है। वादीगण का उक्त कथन स्वतः साबित है क्योंकि प्रतिवादी का मुताबिक रिकॉर्ड उक्त आराजी से कोई संबंध व सरोकार होना साबित नहीं है।

14. इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रकरण में पत्रावली के अवलोकन के अनुसार स्पष्ट है कि मुतनाजा खातेदारी आराजी खसरा संख्या 108 / 0.3804 है0, 109 / 0.0809 है0, 110 / 13.8807 है0, 717 / 87 / 4.1683 है0, 110 / 1 / 29.3316 है0 मौजा कड़वासरों का धोरा पटवार मण्डल नोखड़ा, खसरा संख्या 82 / 1 / 4.8562 है0, 83 / 0.4371 है0, 84 / 0.1295 है0, 85 / 3.9335 है0 मौजा नाइयों की ढाणी तहसील नोखड़ा में अवस्थित है। प्रकरण में वादीगण का प्रथम अनुतोष स्वीकार होने के पश्चात् मुतनाजा आराजी पर वादी का संयुक्त काश्तकार घोषित होने के आधार पर वादी की संयुक्त खातेदारी होना पूर्ण रूप से साबित होती है। अतः मुतनाजा आराजी पर मुताबिक हिस्सा वादीगण का संयुक्त स्वामित्व अविवादित है। परंतु राजस्व रिकॉर्ड में संयुक्त खातेदारी होने से वादी के किसी निश्चित भू–भाग पर बिना विधिक विभाजन करवाये कब्जे के बारे में कथन किया जाना कानूनन अनुचित है। इस कारण मुतनाजा आराजी पर वादीगण की संयुक्त खातेदारी आराजी होने के कारण वादीगण के किसी निश्चित भू–भाग पर बिना विधिक विभाजन करवाये कब्जे के बारे में संशय होने के कारण सुविधा व न्याय का संतुलन वादीगण के पक्ष में होना स्पष्ट नहीं है। अंत में प्रार्थी

Signature Not Verified
Digitally signed by Keshav Kumar Meena
Date: 2025.08.08 09:30:27 IST
Reason: SelfAttested

को अपूरणीय क्षति साबित करने से पूर्व संयुक्त आराजी का विधिक विभाजन करवाया जाना अपरिहार्य शर्त है। इस प्रकार अन्त में उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वादीगण द्वितीय अनुतोष प्रतिवादीगण के विरूद्ध संयुक्त आराजी का विधिक विभाजन करवाये बिना स्थाई निषेधाज्ञा प्राप्त करने के अधिकारी नहीं है। अतः

आदेश है कि

वादीनीगण का दावा बाबत इस्तकरारहक्क आंशिक स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। मुतनाजा आराजी हाल खसरा संख्या 108/0.3804 है0, 109/0.0809 है0, 110/13.8807 है0, 717/87/4.1683 है0, 110/1/29.3316 है0 मौजा कड़वासरों का धोरा पटवार मण्डल नोखड़ा, खसरा संख्या 82/1/4.8562 है0, 83/0.4371 है0, 84/0.1295 है0, 85/3.9335 है0 मौजा नाइयों की ढाणी तहसील नोखड़ा में वादीनीगण को नियमानुसार हक हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। साथ ही वादीगण को उक्त आराजी में कानूनन हक हिस्से तक संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत् राजस्व इंद्राज दुरूस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है।

निर्णय की पृथक से पर्चा डिक्री तैयार की जाये।

आज 04.07.2025 यह निर्णय मेरे द्वारा खुले न्यायालय में सुनाया जाकर हस्ताक्षर एवं मोहर युक्त जारी किया गया।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस)
सहायक कलक्टर
गुढामालानी–बाड़मेर

Signature Not Verified

Digitally signed by Keshav Kumar Meena
Date: 2025.08.08 09:30:27 IST
Reason: SelfAttested

न्यायालय
सहायक कलक्टर/उपखण्ड अधिकारी
गुढामालानी-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी –केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

वाद संख्याः– 2025/13 दर्ज तिथिः– 20.01.2025

1. गवरी पुत्री नवलाराम पत्नी पदमाराम
   जाति जाट निवासी मीठीबेरी
2. दलू पुत्री नवलाराम पत्नी जीवाराज
   जाति जाट रेलों की बेरी पीहर पक्ष ग्राम कड़वासरों का धोरा, पटवार मण्डल नोखड़ा तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर।

............................वादी

बनाम

1. नवलाराम वल्द जेठाराम
2. नारणाराम वल्द नवलाराम
3. पोकराराम वल्द जेठाराम
   कौम जाट निवासी कड़वासरों का धोरा पटवार मण्डल नोखड़ा तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर।
4. शाखा प्रबंधक, जे0ट0जी0बी0 बैंक शाखा होडू।
5. राजस्थान सरकार बजरिये तहसीलदार एवं उपपंजीयक नोखड़ा।

..........................प्रतिवादीगण

उपस्थित अधिवक्ता
वादीः– श्री चिमनसिंह चौधरी
प्रतिवादीः– एकतरफा

राजस्व वाद अन्तर्गत धारा–88, 188
राजस्थान काश्तकारी अधि0–1955

–ःपर्चा डिक्रीः–

वादीनीगण का दावा बाबत इस्तकरारहक्क आंशिक स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। मुतनाजा आराजी हाल खसरा संख्या 108/0.3804 है0, 109/0.0809 है0, 110/13.8807 है0, 717/87/4.1683 है0, 110/1/29.3316 है0 मौजा कड़वासरों का

Signature Not Verified

Digitally signed by Keshav Kumar Meena
Date: 2025.08.08 09:30:27 IST
Reason: SelfAttested

धोरा पटवार मण्डल नोखड़ा, खसरा संख्या 82/1/4.8562 है0, 83/0.4371 है0, 84/0.1295 है0, 85/3.9335 है0 मौजा नाइयों की ढाणी तहसील नोखड़ा में वादीनीगण को नियमानुसार हक हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। साथ ही वादीगण को उक्त आराजी में कानूनन हक हिस्से तक संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत् राजस्व इंद्राज दुरूस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है।

यह पर्चा–डिक्री पालनार्थ हेतु तहसीलदार नोखड़ा को भिजवाई जावें। आदेश जारी हो। पक्षकारान अपना–अपना खर्चा स्वयं वहन करेंगे।

यह पर्चा–डिक्री आज दिनांक 04.07.2025 को मेरे द्वारा लिखवाई जाकर हस्ताक्षर एवं मुहर युक्त जारी की जाकर खुले न्यायालय में सुनाई गई।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस)
सहायक कलक्टर
गुढामालानी–बाड़मेर

Signature Not Verified

Digitally signed by Keshav Kumar Meena
Date: 2025.08.08 09:30:27 IST
Reason: SelfAttested